खण्ड-1 : गांधी जी का धार्मिक विचार

धर्म की धारणा

''धर्म'' गांधीवाद की नीव है। गांधी जी ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'यंग इण्डिया'' में कहा था मैंने अपने व्यवहारिक जीवन के शुरूआत में जो भी कार्य किये अथवा हमने आत्मा के माध्यम से जो व्यक्त किया, उसके पीछे धार्मिक भावना छुपी हुयी थी। जो इस बात की ओर इशारा करती है कि गांधी जी एक राजनीतिज्ञ संत थे। वे मूलभूत राजनीतिज्ञ थे, परंतु हृदय संत का था। दूसरे शब्दों में हम कह सकते है कि राजनीतिज्ञ वेश में धार्मिक व्यक्ति थे। खुद उन्होंने अपनी कहानी को सत्य के प्रति प्रयोग कहा है।[1]

''धर्म'' के स्वरूप एवं महत्व पर चिंतन करते हुए गांधीजी ने धर्म का प्रयोग विस्तृत रूप में किया है। गांधी जी स्वीकार करते हैं कि धर्म किसी खास सम्प्रदाय के दार्शनिक सिद्धांतों एवं रीति-रिवाज के परंम्परा में बंधा नहीं है। 'धर्म' एक ऐसा साध न है जो मनुष्य के 'मन' को पवित्र कर उसे सम्प्रदायिकता के बंधन से उपर उठाकर मनुष्य -मनुष्य के बीच सम्बंध स्थापित करने के लिए प्रोतसाहित करता है।

Scanned by CamScanner

'धर्म' के माध्यम से ही मनुष्य इस सृष्टि के रचियता ईश्वर की खोज एवं उसके साथ एकता स्थापित करने के लिए प्रेरित हो जाता है।

इस विस्तृत अर्थ में ''धर्म'' शब्द हिन्दू, इसाई, जैन, बौद्ध, इस्लाम आदि किसी खास सम्प्रदाय विशेष का ज्ञान न कराकर विश्व की नैतिक व्यवस्था में मनुष्य के विश्वास का भान कराता है। यह धर्म सभी संप्रदायों से उच्च एवं उन सम्प्रदायों का एकमात्र आधार है। यही धर्म उपर्युक्त सभी साम्प्रदायिक धर्मो में अंतिम एकता स्थापित करता है। ऐसे ही व्यापक धर्म को गांधी जी ने मानव जीवन के लिए आवश्यक तत्व स्वीकार किया है, न कि किसी साम्प्रदायिक धर्म को। वे कभी नहीं कहते हैं कि किसी व्यक्ति के हिन्दुत्व, इस्लाम या अन्य कोई धर्म मानना आवश्यक है, उनकी अपनी सोच है कि यदि व्यक्ति के हृदय में सच्चाई एवं पवित्रता है तो वह किसी भी धर्म में निष्ठा रखते हुए आध्यात्मिक उन्नति कर सकता है। इसी कारण उन्होंने किसी भी तरीके से धर्म परिवर्तन के विचार का पुर-जोर खंडन किये थे। इस सम्बंध में उनका कहना है कि ''धर्म'' परिवर्तन की अगर कोशिश की जाय तो विश्व में अशांति ही अंशाति उत्पन्न होगी।''[2]

''धर्म'' तो पूर्णरूप से व्यक्तिगत विषय है। प्रत्येक व्यक्ति को चाहिये कि अपने-अपने धर्म के बनाये नियमों का अनुसरण करते हुये एक-दूसरे के उच्च विचारों को अगीकार करना चाहिए और इस प्रकार ईश्वर तक पहुँचने के मनुष्य-प्रयास में अपना सहयोग देना चाहिए। ... मेरा अपना मानना यह है कि सभी महान धर्म मूलरूप

Scanned by CamScanner

से एक समान है। हमें दूसरे धर्मो का उसी प्रकार सम्मान करना चाहिए जिस प्रकार हम अपने धर्म का सम्मान करते हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि गांधी जी ने धर्म को मानव जीवन के लिए परम आवश्यक माना है, परंतु उन्होंने सभी प्रकार की धार्मिक कट्टरता का विरोध किया है।

गांधीजी ने सभी धर्मो की पूर्णतः बराबरी में विश्वास करते हुए तथा सम्पूर्ण संसार के व्यक्ति का परोपकार हेतु धार्मिक सहिष्णुता पर विशेष जोर दिये हैं। अपने अनेक लेखों तथा भाषणों के माध्यम से उन्होंने विश्व में धार्मिक सौहार्द, स्थापित करने के लिए प्रशंसनीय प्रयाय किये हैं। सम्पूर्ण जगत् में फैली हुयी धर्मान्धता एवं धार्मिक अहंकार को आलोचनीय स्वीकार करते हुए उन्होंने सभी धार्मिक अनुयायियों से एक ही बात कहते थे कि कोई भी धर्म किसी अन्य धर्म की अपेक्षा न तो उत्कृष्ट है और न निकृस्ट ही। जो व्यक्ति जिस धर्म का अनुयायी है उसे उसी धर्म के उच्च सिद्धांतों के अनुसार आचरण करते हुए अपने जीवन को पवित्र बनाते हुए आध्यात्मिक उन्नति का प्रयास करना चाहिए। सभी धर्मों के प्रति अपनी श्रद्धा के कारण गांधी जी प्रायः कहा करते थे कि प्रत्येक हिन्दू को एक अच्छा हिन्दू प्रत्येक मुसलमान को एक अच्छा मुसलमान तथा प्रत्येक ईसाई को एक अच्छा ईसाई बनने का लगातार प्रयास करते रहना चाहिए - दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने धर्म में विश्वास करते हुए नैतिक एवं आध्यात्मिक उत्थान का लगातार कोशिश करना चाहिए क्योंकि सभी धर्म में इसके लिए पूर्ण अवसर पदान किये गये हैं। अपने धर्म को छोड़कर

Scanned by CamScanner

किसी दूसरे धर्म में अपनी नैतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति का खोज करना ठीक नहीं है। सभी धर्मो में 'सत्य' का अंश मौजूद है, किन्तु खुद व्यक्तिगत अपूर्णता के कारण सभी में कुछ-न-कुछ त्रृटि अथवा अपूर्णता परिलक्षित होती है। हमें अपने धर्म का त्याग करने के स्थान पर उसमें पाये जाने वाले अवगुणों को दूर करते रहने का प्रयास करना चाहिए। अपने धर्म में सुधार करने के लिए अन्य धर्मो की अच्छी बातों को स्वीकार करने में कभी परहेज नहीं करनी चाहिए, गांधी जी के विचारों से यह साफ झलकता है कि उन्होंने संसार में सद्भाव तथा धार्मिक सहिष्णुता लाने पर विशेष जोर दिया है और मानव विकास के लिए आवश्यक तत्व के रूप में स्वीकार किया है। गांधी जी का यह उदारवादी विचार प्रशंसा करने योग्य है। परंतु खेद के साथ यह कहना पड़ता है कि भारतीय समाज पर इसका कोई खास प्रभाव नहीं पड़ सका। विश्व के अन्य देशों की भाँति हमारे देश में भी धर्मान्धता एवं धार्मिक कट्टरता अपना जड़ जमाये बैठे हैं। अनेक समाज सुधारकों की तरह इनके उपदेश भी अपना कोई प्रभाव नहीं छोड़ पाये। इस बात पर कोई मतभेद नहीं है कि धर्म प्रचारको एवं उनके कुछ अनुयायियों के सोच भले ही उदार रहे हो, परंतु यह सत्य है कि धर्म केवल मानव-मानव के बीच विभाजक शक्ति के रूप में ही कार्य करने का प्रयास किया और कर रहे हैं। धर्म परायणता के कारण ही गांधी जी ने मानव-जाति के कल्यान हेतु उदार एवं व्यापक अर्थो में धर्म के अनुसार आचरण करने की सलाह दी है।''[3]

Scanned by CamScanner